Vol 2 Issue 11 May 2013

Impact Factor : 1.2018 (GISI)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 11, May. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

तबले का लखनऊ घराना

श्रीकान्त शुक्ल

(प्रबन्ध निदेशक), सरस्वती म्यूज़िकल क्लासेज़, लखनऊ।

सारांशः

आचार्य गिरीष चन्द्र श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक तालकोश के पृष्ठ संख्या 207 में लखनऊ घराने के विषय में इन शब्दों में लिखा है, ''यूँ तो तबला के जन्मदाता के विषय में मतभेद है, परन्तु इस पर सभी एकमत हैं कि दिल्ली के पखावज विशेशज्ञ उ. सिद्धार ख़ाँ पहले तबला वादक हुए, जिन्होंने इस नवीन वाद्य के लिए गततोड़ा और बोलों की रचना की और तबला के प्रथम घराना के रूप में दिल्ली घराना की नींव डाली। उनके तीन पुत्र हुए, जिनसे एक पुत्र जिनका नाम अज्ञात है, उनके तीन पुत्र हुए। उनमें से दो पुत्रों मोदू ख़ाँ और बख्शू ख़ाँ को नवाबी दरबार में विशेष रूप से लखनऊ आमन्त्रित किया गया। वहाँ बस जाने के कारण ही वे दोनों भाई लखनऊ घराने के तबला–वादन के जनक हुए। इस प्रकार लखनऊ को पूरब बाज का प्रथम घराना होने का सौभाग्य मिला। तीसरे पुत्र मक्कू ख़ाँ भी लखनऊ आकर बस गए। इस घराने के वंशजों एवं शिष्यों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया, जिनमें उस्ताद मम्मन ख़ाँ, उनके पुत्र उस्ताद मुहम्मद ख़ाँ, प्रपौत्र मुन्ने ख़ाँ और आबिद हुसैन हुए। इसी घराने के अकबर ख़ाँ उर्फ बल्लू ख़ाँ तथा श्री स्वप्न चौधरी (कलकत्ता) ने भी प्रतिष्ठा प्राप्त की।

प्रस्तावना :–

विस्तृत परम्परा निम्न वंशवृक्ष से अधिक स्पष्ट हो जायेगी–

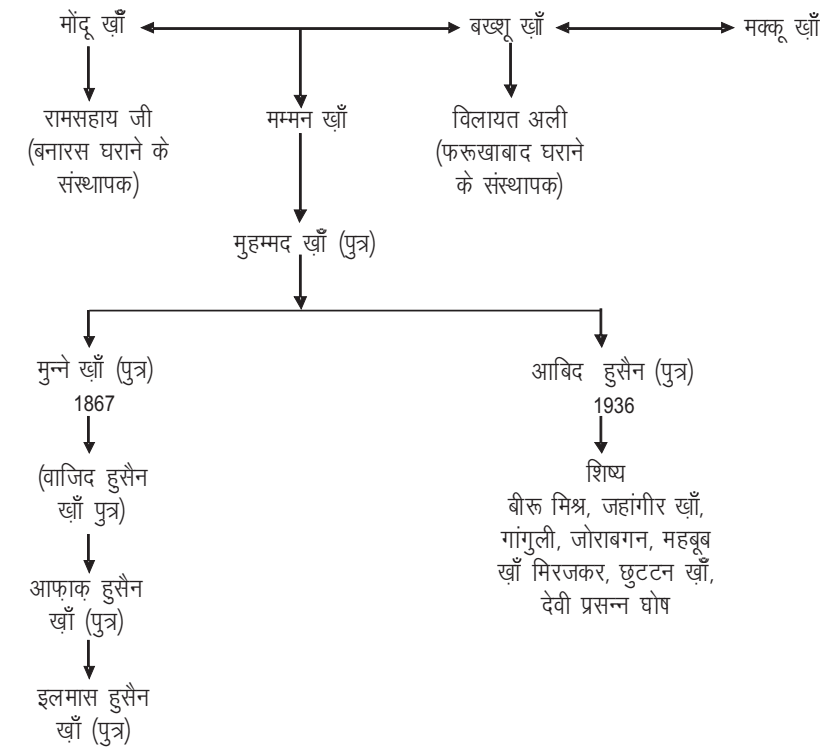

Title : *तबले का लखनऊ घराना*
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] *श्रीकान्त शुक्ल* **yr:2013 vol:2 iss:11**

इस परम्परा का पूर्ण विकास अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह के शासन–काल में हुआ। लखनऊ, ठुमरी गायन–शैली का जनक और कथक नृत्य का गढ़ रहा है, इसलिए इन दोनों के प्रभावों से तबला वादन को विकास की नई दिशा मिली। यहाँ तक कि इसी परम्परा के आबिद हुसैन ने नृत्य के साथ संगत में इतनी ख्याति प्राप्त की कि उन्हें नचकरन का खलीफा कहा जाने लगा। उनको नर्तक अच्छन महाराज जी के साथ अनेक अवसर मिले। आपने कथक नृत्य के अनुकूल बहुत से आर्कशक बोल भी बनाये।

प्रारम्भ में पूरब की शैली पखावज के प्रभाव से काफी जोरदार हो गई थी। परन्तु ज्यों–ज्यों नृत्य का प्रभाव पड़ता गया, लखनऊ की शैली में मधुरता और कोमलता आती गई। यह शैली स्वतंत्र वादन के अतिरिक्त शास्त्रीय तथा सुगम एवं तंत्र की संगति के लिए भी बड़ी उपयुक्त रही है। इस घराने को पूरब में तबला वादन के प्रचार का स्रोत कहा जा सकता है। यहाँ के मोंदू ख़ाँ के शिष्य वाराणसी के पंडित रामसहाय जी हुए, जिन्होनें दीर्घकाल तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद बनारस घराने की नींव डाली। बख्शू ख़ाँ ने अपनी बेटी का विवाह फर्रूखाबाद के हाजी विलायत अली से किया और उनको तबला वादन की श्रेष्ठ शिक्षा दी। उन्होंने अपने गृहनगर लौटकर तबला के फर्रुखाबाद घराने की स्थापना की। श्री मुलगांवकर ने इस घराने का उदय काल अंदाज से सन् 1600 से सन् 1650 के मध्य माना है। अतः हम इस निश्कर्श पर पहुंचते हैं कि तबला के लखनऊ घराने से ही फर्रूखाबाद और बनारस के घरानों का जन्म हुआ।

डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी जी ने संगीत पत्रिका के अगस्त 2012 के अंक में पृष्ठ संख्या 24–27 में प्रकाशित अपने लेख तबले का नचकरन बाज–लखनऊ घराना में निम्न प्रकार से लिखा है–

''दिल्ली घराने के संस्थापक उ. सिद्धार ख़ाँ दाढ़ी के तीसरे पुत्र के तीन पुत्र हुए–उ. मोदू ख़ाँ, उ0 बख्शू ख़ाँ और उ. मक्कू ख़ाँ। उनका तबले के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लखनऊ के तत्कालीन नवाब अजमत जंग बहादुर ने दिल्ली से उ. मोंदू ख़ाँ और उ. बख्शू ख़ाँ को नवाबी दरबार में विशेष रूप से आमन्त्रित किया और ये दोनों भाई लखनऊ में ही बस गये। इस प्रकार लखनऊ को पूरब बाज का प्रथम घराना होने का सौभाग्य मिला। उ. मोंदू ख़ाँ ने लखनऊ के सांगीतिक परिवेश के आधार पर दिल्ली बाज के तबले में कुछ परिवर्तन किया, जिसके फलस्वरूप तबले का लखनऊ घराना स्थापित हुआ।

उ. मोंदू ख़ाँ के पुत्र उ. जाहिद ख़ाँ अच्छे कलाकार थे। दुर्भाग्य से वे कम उम्र में ही स्वर्गवासी हो गये। उ.मोंदू ख़ाँ के प्रथम शिष्यों में पं. रामसहाय मिश्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है। कहते हैं कि उ. मोंदू ख़ाँ अपने छोटे भाई उ. बख्शू ख़ाँ के व्यवहार से क्षुब्ध रहा करते थे, अतः उन्होनें बनारस से आए कथक–परिवार के प्रतिभाशाली किशोर रामसहाय मिश्र को तैयार करने का निर्णय लिया। रामसहाय ने बारह वर्ष तक उस्ताद के घर में रह कर तबले की पूर्ण शिक्षा प्राप्त की। उ. मोदू ख़ाँ की पत्नी, जिनके विशय में प्रचलित है कि वे पंजाब के किसी बड़े उस्ताद की पुत्री थीं तथा तबले की जानकार थीं ने भी रामसहाय को, उनके उस्ताद की अनुपस्थिति में तबला सिखाया था। इस प्रकार गुरु तथा गुरु पत्नी दोनों की ओर से लखनऊ तथा पंजाब घराने की विद्या पं. रामसहाय को प्राप्त हुई। पं. रामसहाय तबले की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात अपने गृह नगर बनारस (वाराणसी) वापस आ गये तथा तबले में यथोचित परिवर्तन करके उन्होनें तबले के एक नये घराने की नींव रखी, जो बनारस घराना के नाम से विख्यात है। उ. मोदू ख़ाँ के शिष्यों में दूसरा नाम उनके भतीजे तथा उ. बख़्शू ख़ाँ के पुत्र उ. मम्मन ख़ाँ उर्फ मम्मू ख़ाँ का आता है।

उस्ताद बख्शू ख़ाँ के तीन पुत्र थे–उ. मम्मन उर्फ़ मम्मू ख़ाँ, उ. केसरी ख़ाँ, तथा उ. सलारी ख़ाँ। कुछ विद्वान् केसरी ख़ाँ को उनका शिश्य मानते हैं। उनके दामाद तथा शिष्य उ. हाजी विलायती अली ख़ाँ थे। वे भी विख्यात तबला–वादक थे। उन्होंने अपनी एक नवीन शैली का विकास किया तथा अपने गृहनगर फ़र्रूखाबाद वापस आकर तबले के फ़र्रूखाबाद घराना की स्थापना की।

उ0 मम्मू ख़ाँ ने पिता उ. बख़्शू ख़ाँ के होते हुए भी अधिकतर शिक्षा अपने चाचा उ. मोदू ख़ाँ से ही प्राप्त की थी। उ. मम्मू ख़ाँ लखनऊ घराने के ख़लीफ़ा माने गए। तबले में धिरकिट शब्द की निकास को स्याही से सरका कर पूरे पंजे से बजाने का प्रचलन उन्होंने ही आरम्भ किया । उ. बख्शू ख़ाँ के दूसरे पुत्र उ. सलारी मियाँ गत–वादन में अत्यन्त प्रवीण तथा रंग भरने में बड़े कुशल थे। उ. बख्शू ख़ाँ के एक शिष्य बेचाराम चट्टोपाध्याय थे, जिन्होंने अपने मूल स्थान विष्णुपुर लौटकर लखनऊ घराने की शैली का प्रचार किया। वह शैली विश्णुपुर–परम्परा कहलाने लगी। यह परम्परा उ0 मम्मू ख़ाँ के शिष्य विश्णुपुर निवासी रामप्रसन्न बन्द्योपाध्याय से और भी विकसित एवं सुदृढ़ हुई।

उ. मम्मू ख़ाँ के पुत्र उ. मम्मद (मुहम्मद) ख़ाँ तथा नज्जू ख़ाँ थे। वे दोनों भी यशस्वी कलाकार थे। उ. मम्मद ख़ाँ की मृत्यु सन् 1879 में हुई थी। मुहम्मद करम इमाम ने मआदुनल–मौसिक में उ. मम्मू ख़ाँ के लड़के को उ. मम्मू ख़ाँ से भी श्रेश्ठ बताया है। उ. मुहम्मद ख़ाँ के तीन पुत्र थे–मुन्ने ख़ाँ, नादिर ख़ाँ और आबिद हुसैन। उ. नज्जू ख़ाँ के भी तीन पुत्र थे–ज़ाकिर हुसैन (जक्कन ख़ाँ), छुट्टन ख़ाँ और लाडले ख़ाँ। उ. मुहम्मद ख़ाँ नवाब सुजातुद्दौला के दरबारी कलाकार थे, जबकि उ. मुन्ने ख़ाँ (मृत्यु सन् 1890) नवाब वाजिदशाह के दरबार के तबला–रत्न थे। मुहम्मद करम इमाम के अनुसार प्रख्यात कथक–नर्तक नृत्याचार्य कालका–बिन्दादीन महाराज के नृत्य के साथ लखनऊ दरबार में उ. बख़्शू ख़ाँ प्रपौत्र उ. मुन्ने ख़ाँ संगति किया करते थे। आबिद हुसैन ने अपने पिता उ. मुहम्मद ख़ाँ के साथ ही अपने बड़े भाई उ. मुन्ने ख़ाँ के सानिध्य में तबले की उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त की थी। बड़े भाई उ. मुन्ने की मृत्यु के उपरान्त आबिद हुसैन ने मंच–प्रदर्शन आरम्भ किया। उ. आबिद हुसैन (सन् 1867–1936) बड़े विद्वान, परिश्रमी तथा प्रतिभा–सम्पन्न कलाकार थे। लालकिला गत की रचना उ. आबिद हुसैन की ही देन है। उ. आबिद हुसैन को कथक के साथ संगत में महारत हासिल थी। नृत्य के साथ संगति में उन्हें इतनी ख्याति प्राप्त थी कि उन्हें नचकरन बाज का ख़लीफ़ा कहा जाता था। उन्होंने नर्तक अच्छन महाराज के साथ संगत की थी। सन् 1926 ई. में लखनऊ में मैरिस म्यूजिक कॉलेज (वर्तमान नाम भातखण्डे संगीत संस्थान–डीम्ड विश्वविद्यालय) की स्थापना के साथ तबले के प्राध्यापक के रूप में आबिद हुसैन जी की नियुक्ति की गई थी। उनके दामाद तथा भतीजे उ. वाजिद हुसैन ख़ाँ यशस्वी कलाकार हुए। उ. वाजिद हुसैन के पुत्र उ. आफ़ाक़ हुसैन तथा पौत्र इलमास हुसैन इस परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। उ0 आबिद हुसैन के प्रमुख शिश्य हैं–उ0 जहाँगीर ख़ाँ (इन्दौर), पं. हिरेन्द्र कुमार गांगुली (कोलकाता), जोराबगान, उ. महबूब ख़ाँ मिरजकर (पूना) छुट्टन ख़ाँ, देवी प्रसन्न घोश, एस. के. चौबे (भातखण्डे संगीत संस्थान के प्रथम तबला छात्र) इत्यादि। उ. आबिद हुसैन की कोई संतान नहीं थी, उनके भाई उ0 नादिर हुसैन के तीन पुत्र थे–रज़ा हुसैन (उनके पुत्र मुस्तफ़ा हुसैन हुए), वाजिद हुसैन (उनके पुत्र आफ़ाक़ हुसैन हुए) और सज्जाद ख़ाँ। आबिद हुसैन ने अपनी पुत्री काज़मी बेगम का विवाह वाजिद हुसैन (सन् 1900–1978) से किया था।

ख़लीफ़ा वाजिद हुसैन के पुत्र उस्ताद आफ़ाक़ हुसैन (सन् 1930–1990) थे। वे भी प्रसिद्ध तबला–वादक थे। सन् 1950 में आफ़ाक़ हुसैन कोलकाता चले गये। वहाँ उन्होंने उ. बड़े गुलामअली ख़ाँ तथा उ. अमीर ख़ाँ के साथ खूब संगति की। सन् 1971 में वे लखनऊ वापस आ गए। वे लखनऊ के कथक केन्द्र एवं दूरदर्शन केन्द्र में भी कार्यरत थे। वाजिद हुसैन के दो पुत्र इलमास हुसैन (जन्म सन् 1957) एवं इलियास हुसैन (जन्म सन् 1977) है, उनके शिश्य इंग्लैण्ड के डॉ. जेम्स किप्पन हैं। जेम्स किप्पन ने एक पुस्तक भी प्रकाशित की है–''Tabla of Lucknow Gharana''. उ. इलमास हुसैन दूरदर्शन केन्द्र में तबला–वादक के रूप में कार्यरत हैं तथा देश–विदेश में तबला–वादन कर रहे हैं। वर्तमान में उ. इलमास हुसैन लखनऊ घराने के ख़लीफ़ा हैं तथा इस परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं।

उ. मुन्ने ख़ाँ के पुत्र बहादुर हुसैन, पौत्र नायाब हुसैन, पौत्र इरशाद हुसैन और इन्तिजार हुसैन तथा मुन्ने ख़ाँ की पुत्री खम्मन बीबी का पुत्र सुल्तान हुसैन आदि भी तबले के प्रसिद्ध कलाकार हुए।

DSpace™

उ. मम्मू ख़ाँ की पुत्री छोटी बीबी तथा नाती बाबू ख़ाँ ने भी तबले की शिक्षा उ. मम्मू ख़ाँ से ही प्राप्त की थी। वे बहुत वर्षों तक कोलकाता में रहे। वहीं उनका शिश्य परिवार फैला है। उ. मम्मू ख़ाँ के भतीजों में अल्लाबख्श, बहादुर ख़ाँ तथा घसीट ख़ाँ के नाम आते हैं। उनके दूसरे भतीजे गुलाम हैदर पटना चले गए। उ. अली कादर ख़ाँ से पटना के सुप्रसिद्ध केशव महाराजा ने तबले की शिक्षा ली थी। उ. घसीट ख़ाँ की परम्परा में पुत्र छोटे ख़ाँ, पौत्र सादत अली, प्रपौत रजा हुसैन तथा उनके पुत्र जाफ़र ख़ाँ तथा अकबर हुसैन उर्फ बल्लू ख़ाँ हैं। उ. गुलाम हैदर के एक भतीजे अलीगढ़ में थे, जिनका नाम अली रज़ा था। अजराड़ा घराने के उ0 हबीबुद्दीन ख़ाँ ने भी इनसे शिक्षा पाई थी। इस घराने के वंशजों में गुलाम अब्बास ख़ाँ, इरशाद ख़ाँ, इन्तेजार ख़ाँ आदि के नाम प्रसिद्ध हैं।

लखनऊ घराने के अन्य कई कलाकार श्रेष्ठ ताबलिक के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं, जिनके नाम है– रहीमबख्श रूग्गाजी, अमान ख़ाँ, सुप्पन ख़ाँ (ढाका), मुहम्मद हुसैन (मुरादाबाद वाले), रामधन, राम कन्हाई (त्रिपुरा), फ़कीर साहब, मन्मथनाथ गांगुली (कोलकाता), अल्लादिया ख़ाँ (अमरावती वाले), हिरेन्द्र किशोर रायचौधरी (मैमन सिंह), मिर्जा आलम नवाब, फ़ैयाज ख़ाँ (मुरादाबाद वाले), हबीबुल्ला, यार रसूल (फुलझड़ी ख़ाँ), नगेन्द्र नाथ बसु, उ. शेख़ दाउद (हैदराबाद), शिशिर शोभन भट्टाचार्य, रायबहादुर केशवचन्द्र बनर्जी (कोलकाता), धन्नू उस्ताद गंगादयाल पाण्डे, प्रबीर मित्रा इत्यादि।

जबकि प्रो. जेम्स किप्पन ने Genealogy of the Lucknow Gharana (चार्ट–4) में लखनऊ का तबला–घराना निम्न प्रकार से दर्शाया है–

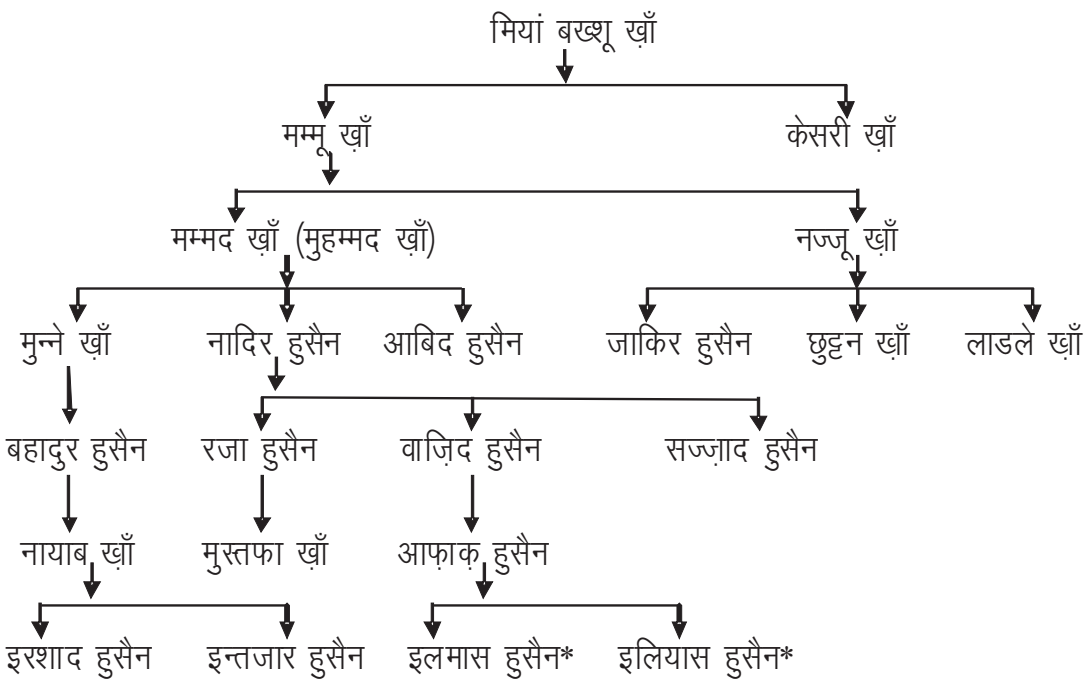

* चिन्हित नाम घरानों की वर्तमान पीढ़ी में हैं।

परन्तु मुझे वर्तमान में लखनऊ घराने की पीढ़ियों के बारे में प्राप्त जानकारियों तथा उनके ज्येष्ठ पुत्र उस्ताद इलमास हुसैन जी द्वारा दिये गये साक्षात्कार के अनुसार प्रो. जेम्स किप्पन द्वारा दर्शाये गये उपर्युक्त लखनऊ का तबला–घराना (चार्ट–4) पूर्ण रूप से सही होने की पुष्टि करता है।

विशेषताएँ एवं वादन–शैली–

लखनऊ घराने का सर्वांगीण विकास अवध के अन्तिम नवाब वाज़िद अली शाह के शासनकाल में हुआ। ठुमरी गायन शैली और कथक नृत्य का केन्द्र होने के कारण दोनों के प्रभाव से लखनऊ के तबला वादन के विकास को नई दिशा मिली। लखनऊ घराने की वादन–शैली की प्रमुख वादन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

चूँकि दिल्ली के कलाकारों द्वारा लखनऊ घराने की स्थापना हुई थी, अतः दिल्ली बाज की सम्पूर्ण विशेषताएँ तो लखनऊ के तबले में स्वतः ही आ गईं, परन्तु दिल्ली का बन्द एवं कोमल तबला लखनऊ में पखावज और नृत्य के प्रभाव से खुला और जोरदार हो गया। यहाँ चाँटी की अपेक्षा स्याही तथा लव का प्रयोग अधिक होता है।

इस बाज में दो उँगलियों के स्थान पर पाँचों उँगलियों का प्रयोग किया जाता है तथा बाएँ पर अँगूठे द्वारा मीड़, घसीट या घिस्सा उत्पन्न करने का चलन है। बाएँ के चमड़े को कलाई के नीचे के हिस्से से हल्का सा घिसकर जो मधुर ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे घिस्सा, घसीट या मीड़ कहते हैं। लखनऊ घराने के कायदे दिल्ली और अजराड़ा घराने के कायदों से भिन्न और कुछ बड़े होते हैं। यहाँ कायदे की अपेक्षा विविध लयकारी युक्त टुकड़े, नौहक्का, परन, गत–परन, विविध प्रकार के चक्रदार, गतें इत्यादि रचनाए अधिक बजाई जाती हैं।

DSpace™

गत–तीनताल

धाऽघेघे	नकधिन	तकधिन	तकधिन।	तकधिन	तूंनाकत्ता	तकतक	तिनतिन ।
×				2			
तकत्त	कतधाऽ	धाऽऽघे	नकधिन।	कतकघे	तकधिन	धागेनधा	गेनातिन ।
0				3			
ताऽकेके	नकतिन	तकतिन	तकतिन।	तकतिन	तूनाकत्ता	तकतक	तिनतिन ।
×				2			

ताकत्त कतधाऽ धाऽऽघे नकधिन । कतकघेकतकघे तकधिन धाऽऽघेनकधिन कतकघेनकधिन ।धा
0 3 र

इस बाज में तगन्न, किटतकधेत्ता, धिड़ान, धिड़ान, धिनतड़ाऽन, धेत्धेत्घत्घेड़नग, घेतान, क्डां, धेटेधेटे, क्ड़धेतेटे, धिरकिट आदि बोल समूहों का प्रयोग अधिक देखा जाता है। धेटेधेटेधागेतेटे एवं क्ड़धेतेटेधानगेतेटे बोलों का प्रयोग तो लखनऊ घराने की पहचान है।

कथक नृत्य में प्रायः कलाकार कुछ रचनाओं को पहले पढ़ता है, फिर उसे अंग–संचालन द्वारा प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार इस घराने के तबला वादक कभी–कभी अपनी कुछ रचनाओं की पढ़ंत करते हैं, फिर उसे तबले पर बजाते हैं। यह लखनऊ घराने के तबले पर नृत्य के प्रभाव को स्पष्ट करता है।

लखनऊ पर पंजाब घराने का भी कुछ प्रभाव है। इस घराने के प्रवर्तक उ. मोदू ख़ाँ की पत्नी पंजाब के किसी उस्ताद की पुत्री थी और उ. मोदू ख़ाँ को अपनी ससुराल से कुछ गतें उपहार (दहेज) में मिली थीं। आज भी लखनऊ तथा बनारस घराने के कुछ लोगों के पास ऐसी गतें सुरक्षित हैं, जिन्हें वे दहेज की परन के नाम से पुकारते हैं।

ठुमरी गायन–शैली के जन्म और विकास का मुख्य केन्द्र लखनऊ रहा है। ठुमरी के साथ संगति में लग्गी–लड़ी का प्रयोग प्रमुखता से होता है, जिसके फलस्वरूप लखनऊ की वादन–शैली में लग्गियों एवं लड़ियों का प्रयोग जुड़ गया। लग्गी–लड़ी का प्रयोग लखनऊ घराने के कलाकारों ने लोकवाद्य शैली से ग्रहण किया।

संगति के लिये लखनऊ की वादन–शैली पूर्णतया सफल है। गायन, वादन के साथ नृत्य की संगति के लिए भी यह बाज सफल है, क्योंकि इसमें खुले और जोरदार परन, चक्करदार टुकड़ों आदि का प्रयोग होता है। लखनऊ घराने का तबला संगति के साथ–साथ स्वतंत्र में भी सफल है क्योंकि इसमें दिल्ली बाज की मुलायमियत तो है ही, साथ ही पखावज एवं कथक नृत्य के प्रभाव से इसकी वादन–शैली में जोरदारी एवं गम्भीरता का समावेश भी हो गया है।

संदर्भ–

श्रीवास्तव, आचार्य गिरीष चंद्र, तालकोश, पृष्ठ सं0 207–208।
जेम्स किप्पन ''Tabla of Lucknow Gharana''.
प्रो.जेम्स किप्पन "Genealogy of the Lucknow Gharana"
डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी 'संगीत पत्रिका' के अगस्त 2012 के अंक में पृष्ठ संख्या 24–27
भगवतशरण शर्मा, तालप्रकाश, पेज न. 15–22।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net